संपादक के नोट

यहोवा की स्तुति हो। मैं अपने सारे प्रिय पाठकों को मेरे उद्धारकरता येशु के नाम से अभिवादन करती हूँ। मैं अपने परमेश्वर को सारे अद्भुत आशीषों के लिए धन्यवाद देती हूँ जो उसने हम में से हर एक को दिया है। सारा महिमा परमेश्वर का है।

हम उसकी महिमा को कैसे देखते हैं? जब हम उसकी स्तुति करते हैं, वह हमारे मध्य वास करने आता है। उसकी महिमा हम सब में भर जाती है। इसलिए परमेश्वर की स्तुति करो अपने सारे हृदय और मन से।

२ इतिहास ५:१३–१४ – जब तुरही वादक और गायक एक स्वर में यहोवा की स्तुति और महिमा करने के लिए तुरहियों, झांझों और वाद्यों के साथ मिलकर एक स्वर में गा उठे और यह कहकर यहोवा की प्रशंसा करने लगे, "निश्चय वह भला है, क्योंकि उसकी करूणा सदा की है," तब वह भवन अर्थात यहोवा का भवन बादल से भर गया। अतः याजक उस बादल के कारण सेवा–टहल करने को खड़े न रह सके, क्योंकि यहोवा के तेज़ से परमेश्वर का भवन भर गया था।

राजा सुलैमान जानता था कि परमेश्वर की महिमा को लाने का रहस्य केवल परमेश्वर की स्तुति करना है। इसलिए उसने परमेश्वर की स्तुति करने के लिए लोगों को नियुक्त किया जो तुरहियाँ, झाँझ, संगीत के उपकरणों के साथ थे। वें अपने आप को पवित्र भी करते थे, जैसे दिया गया है, **२ इतिहास ५:११–१२ – फिर याजक पवित्रस्थान से निकले और उनमें से किसी एक दल के याजकों ने नहीं वरन् वहां उपस्थित सभी याजकों ने अपने आप को पवित्र किया था। और सभी लेवीय गवैये अर्थात आसाप, हेमान, यदूतून तथा उनके पुत्र और सम्बन्धी, महीन मलमल पहने, झांझ, सारंगियां और वीणाएं लिए हुए वेदी के पूर्व की ओर खड़े थे। उनमें एक साथ मिलकर तुरहियां बजाने वाले एक सौ बीस याजक भी थे।**

इसलिए जब वें गाते थे, "यहोवा भला है, उसकी करूणा सदा की है" परमेश्वर का भवन एक बादल से भर जाता था।

इसलिए तुम्हारे जीवन में भी परमेश्वर की स्तुति करने का एक निर्णय लो क्योंकि यह कारण है कि परमेश्वर ने हमे चुना है। **यशायाह ४३:२१** कहता है, – **जिस प्रजा को मैंने अपने लिए बनाया है, वह मेरा गुणानुवाद करेगी।**

स्वर्ग में उसकी स्तुति दिन–रात चलती थी, इसलिए स्वर्ग परमेश्वर के महिमा से भरा हुआ था। **प्रकाशितवाक्य ४:११** कहता है, – **"हे हमारे प्रभु और परमेश्वर, तू ही महिमा, आदर और सामर्थ्य के योग्य है, क्योंकि तू ने ही सब वस्तुओं को सृजा, और उनका अस्तित्व और उनकी सृष्टि तेरी ही इच्छा से हुई।**

एक भी दिन के लिए मनुष्य को खुश करना नहीं। परमेश्वर को सारा महिमा, आदर, जो उसका है, अपने हृदयों की गहराईयों से देना।

तुम जितना परमेश्वर की स्तुति तुम्हारे जीवन में करोगे उतना तुम महिमा प्राप्त करोगे। जब हम परमेश्वर की आराधना करते हैं, उसकी महिमा हमारे मध्य उतर आता है।

भजन संहिता का रचईकार कहता है, **भजन संहिता २२:३** में– **पर तू तो पवित्र है, तू जो इस्राएल की स्तुति में विराजमान है।**

परमेश्वर के प्रिय लोगों, परमेश्वर की स्तुति अपने सारे हृदयों से करो जैसे भजन संहिता का रचईकार कहता है, **भजन संहिता १००:४** में – **उसके फाटकों में धन्यवाद, और उसके आंगनों में स्तुति करते हुए प्रवेश करो, उसे धन्यवाद दो और उसके नाम को धन्य कहो।**

स्वर्ग उसकी महिमा से भरा है, इसलिए उसके द्वारा बनाए गए लोग भी परमेश्वर की स्तुति करो। **भजन संहिता १०२:१८ – यह आने वाली पीढ़ी के लिए लिखा जाएगा, कि एक जाति जो सृजी जाने को है, वह याह की स्तुति करे।**

स्वर्गदूत भी परमेश्वर की सेवा स्तुति द्वारा करते है। **भजन संहिता १०३:२० – हे यहोवा के दूतो, तुम जो बड़े पराक्रमी हो, और उसके वचन की पुकार को सुनते हो, तुम जो उसके वचन का पालन करते हो, उसको धन्य कहो!**

परमेश्वर के संत लोग भी परमेश्वर के पवित्र नाम की स्तुति करें। **भजन संहिता ३०:४ – हे यहोवा के भक्तो, उसका भजन गाओ, और उसके पवित्र नाम का धन्यवाद करो।**

भजन संहिता १४९:५ – भक्त लोग महिमा में प्रफुल्लित हों; वे अपने बिछौनों पर भी आनन्द से गाएं।

सारे लोग परमेश्वर की स्तुति करें। **भजन संहिता ११७:१ – हे जाति जाति के सब लोगो, यहोवा की स्तुति करो! हे राज्य राज्य के सब लोगो, उसका जयजयकार करो!**

बच्चों की भी ज़िम्मेदारी बनती है परमेश्वर की स्तुति करने की। **मत्ती २१:१६ – और उन्होंने उस से कहा, क्या तू सुनता है कि ये क्या कह रहे हैं? येशु ने उनसे कहा, "हां, पर क्या तुमने यह कभी नहीं पढ़ाः शिशुओं और दुधमुंहे बच्चों से तू ने अपने लिए स्तुति तैयार की है?**

तू ने अपने बैरियों के कारण शिशुओं और दूध–पीते बच्चों के द्वारा अपना सामर्थ स्थापित किया, कि शत्रु और बदला लेने वाले चुप किए जाएं।

सब प्राणी याह की स्तुति करें। केवल परमेश्वर सारी महीमा, आदर और स्तुति के योगय है। इसलिए यह हमारी ज़िम्मेदारी है कि हम परमेश्वर को आदर दे स्तुति और आराधना के द्वारा। इसलिए, तुम चाहे खाओ या पीयो या जो भी तुम करो, सारी चीज़े तुम परमेश्वर की महिमा के लिए करो।

इसलिए मेरे प्रिय पाठकों, मैं यह विश्वास करती हूँ की तुम भी परमेश्वर की स्तुति करके उसकी महीमा को तुम्हारे और तुम्हारे परिवार के जीवनों में प्राप्त करो। परमेश्वर तुम सबको आशीष दे तब तक कि हम अगले महिने फिर मिले।

– पास्टर सरोजा म.

न शक्ति से, न सामर्थ से, केवल मेरे आत्मा से, कहता है परमेश्वर

हम देखते हैं **ज़कर्याह ४:६** में, – **फिर उसने मुझ से कहा, "जरूब्बाबेल के लिए यहोवा का वचन यह है: "न बल से न शक्ति से, परन्तु मेरे आत्मा के द्वारा," सेनाओं का यहोवा यही कहता है।** इस्राएली लोग बेबीलोन के बंधन में सत्तर वर्ष के लिए थे। थोड़ा–थोड़ा कर यहुदी लोग बंधन में से बाहर निकल आए। फिर उन्होंने देखा की नगर का दिवाँर टूटा हुआ था और सुलैमान का मंदिर जलाकर नाश कर दिया गया था। इस्राएल पूर्ण तरह से नाश हो चुका था। यह सब देखकर वहाँ पर एक मनुष्य था जो दुखी था और वह था जरूब्बाबेल। यह देखने के बाद वह खेदयुक्त हुआ और उसने यरूशलेम की मंदिर को फिर से बाँधने का प्रयत्न किया। इस समय व कई समस्याओं का सामना अपने जीवन में करता है। दुख, बाधाएँ और मुश्किलें हैं। वही समय है जब परमेश्वर ने उससे यह ऊपर लिखित वचन नबी के द्वारा कहा। परमेश्वर ने उनसे कहा कि यह कार्य उनकी बुद्धि या ज्ञान से नहीं केवल परमेश्वर की आत्मा से होगा। परमेश्वर ने फिरकर शत्रु से कहा, जैसा दिया गया है, **ज़कर्याह ४:७** में, **"हे महापर्वत, तू क्या है? जरूब्बाबेल के सामने तू मैदान बन जाएगा, और जब वह भवन की चोटी का पत्थर लगाने पर होगा तब धन्य हो, धन्य हो! की पुकार गूंज उठेगी।**

परमेश्वर की आत्मा ने मुसीबत लाने वाले से बात की और उससे जो बाधाएँ ले आता है, कि वह जरूब्बाबेल के सामने नाष हो जाएगा। हमारा परमेश्वर सर्वशक्तिमान है और कोई नहीं आ सकता है, परमेश्वर की इच्छा और योजना के विरूद्ध जो हमारे जीवनों में हैं। परमेश्वर निश्चित रूप से करेगा। यहुदी लोग बेबीलोन बंधन में बहुत साल थे और उनके लौटने पर उन्होंने उनके नगर को जलकर टूटा हूआ पाया। यह हमारे जीवनों में भी सच्च है। जब हम परमेश्वर के साथ है थोड़े सालों के लिए और फिर हम परमेश्वर से दूर चले जाते हैं तब हम बहुत हानि पहुँचाते हैं और नाश लेकर आते हैं हमारी आत्मा और हमारी देह पर। चाहे वह आतमिक रूप से हो या शारिरिक रूप से, हम बहुत–सी मुश्कलों का सामना हमारे जीवन में करते हैं।

एक भाई एक बार कलिसिया के सभा में आया था। वह यहाँ बहुत साल पहले आया था और परमेश्वर ने उसे दुष्ट की तकलीफ़ो से छुड़या था। वह प्रभु येशु मसीह द्वारा छुड़ाया गया था। लेकिन बहुत सालों से वह कलिसिया में नहीं आ रहा था, न जाने क्यों। उसके लौट आने पर मैं परमेश्वर का वचन–प्रचार कर रही थी और वह बैठकर अपने–आप में ही हँस रहा था। उस समय मैं समझ गई कि यह भाई फिर एक बार दुष्ट शक्ति के प्रभाव में था। पवित्र आत्मा की शक्ति–संचय और प्रार्थना के बाद जब मैं उसके लोगों से मिली तो उन लोगों ने मुझे कहा कि उसे फिर एक बार वही तकलीफ़ हो गई। कुछ समय के लिए जब हम परमेश्वर से दूर जाते हैं तब शत्रु का कार्य हमारे जीवनों में फिर एक बार शुरू होता है।

जब इस्राएली लोग लौट आए तब उन्होंने उनके नगर को खंडहर बना पाया। लेकिन जब जरूब्बाबेल, एक जवान लड़के ने मंदिर की आवस्था को देखा तब उसके भीतर एक जोश उठा और उसे याद आया कि किस तरह से कसदियों ने उनके देश और मंदिर को नाश किया। यह उसके मन में आया कि वें फिर एक बार मंदिर को बाँधे, और उसी समय परमेश्वर उससे कहता है, "न शक्ति से, न सामर्थ से, पर मेरे आत्मा के द्वारा, यह कार्य हो सकता है। मंदिर उसके बुद्धि और ज्ञान से नहीं बाँधा जा सका है, लेकिन केवल परमेश्वर के सामर्थ से। परमेश्वर ने जरूब्बाबेल से नबी के ज़रिए बात किया और उसी नबी के ज़रिए परमेश्वर ने उससे बात की जो बाधा, दुख और मुश्किले ले आता है जैसे दिया गया है **ज़कर्याह ४:७** में **"हे महापर्वत, तू क्या है? जरूब्बाबेल के सामने तू मैदान बन जाएगा, और जब वह भवन की चोटी का पत्थर लगाने पर होगा तब धन्य हो, धन्य हो!" की पुकार गूंज उठेगी।**

परमेश्वर ने फिर से एक बार मुड़कर जरूब्बाबेल से बात की, जैसे दिया गया है, **ज़कर्याह ४:८–९ – यहोवा का यह वचन भी मेरे पास पहुंचा, "इस भवन की नींव जरूब्बाबेल के हाथों ने डाली है, और उसी के हाथ इसको पूरा करेंगे। तब तू जानेगा कि सेनाओं के यहोवा ने मुझे तुम्हारे पास भेजा है।** यहाँ हम देखते हैं कि परमेश्वर जवान जरूब्बाबेल को प्रोत्साहित करता है। परमेश्वर उसे कहता है कि जिस कार्य का उसने आरंभ किया है वह निश्चित रूप से पूरा होगा और कार्य का पूरा होने तक परमेश्वर उसके साथ रहेगा।

जैसे कि मैंने पहले कहा, जब हम एक कदम आगे बढ़ाते हैं परमेश्वर के कार्य को करने के लिए परमेश्वर उस कार्य को करने के लिए तीन कदम आगे बढ़ाएगा हमारी ओर। इसलिए जब हम सोचते हैं हमारे हृदय में परमेश्वर के लिए विश्वास से कोई कार्य करने के लिए, तब परमेश्वर वह कार्य करेगा। हम यहाँ देखते हैं कि फिर एक बार परमेश्वर उससे बात करता है और उसे प्रोत्साहित करता है उसके विश्वास को बढ़ाते हुए। अब इन्सान होने के कारण उसके हृदय में भय हो सकता है यह सोचकर कि कैसे वह मंदिर और दिवाँरो को बाँध पाएगा। लेकिन परमेश्वर ने उसे उसके चुने हुए नबिओं के द्वारा प्रोत्साहित किया। इसी प्रकार, एक साल के अंदर हमने रोस ऑफ शारोन की परियोजना तिरूनेलवेल्ली में शूरूवात की। उस समय मेरे हृदय में वही भय था। हम में परमेश्वर के लिए महान कार्यों को करने की इच्छा थी। हम जानते हैं कि हमारी बुद्धि और ज्ञान से हम कुछ नहीं कर सकते और केवल परमेश्वर यह कार्य को कर सकता है। फिर भी मनुष्य होने के कारण हमारे हृदयों में भय और शरम रहता है, यह सोचकर की अगर कार्य पूरा नहीं हुआ तो हम क्या करें? चाहे हमारा विश्वास कितना भी हो, हमारे हृदयों में भय रहता है। यह वह समय है जब परमेश्वर ने हमसे उसके चुने हुए दासों द्वारा बात की "तुमने कार्य को शुरू किया है लेकिन मैं उस कार्य को पूरा करूँगा क्योंकि मैं तुम्हारे साथ हूँ।" परमेश्वर ने यह वचन मुझसे उसके कई दासों द्वारा कहा। "जीसस कम्स बाईबल कॉलेज" जो तिरूनेलवेल्ली में है, वहाँ वचन सिखाने कि मेरी आखरी भेंट के समय मैंने भाई जॉन रबिंद्रनाथजी से कहा था कि हम ३ अक्तूबर २००४ को उद्घाटन करेंगे। उस समय आधा काम भी नहीं हूआ

था और भाई रबिंद्रनाथजी ने मुझ से कहा था कि वें उस तारीख़ को उनके पत्रिका में प्रकाशित करेंगे। मेरे हृदय में यह भय था और मैंने सोचा "परमेश्वर तूने मुझे यह तारीख़ दी है, मैंने भाई रबिंद्रनाथजी से कहा है और वें इसे पत्रिका में छपाने वाले हैं। मैंने सोचा कि परमेश्वर, मैं कुछ नहीं कर सकती। इतने लाखों को इकट्ठा करना आसान नहीं है। लेकिन मैं यह जानती हूँ कि यह हमारे बुद्धि या ज्ञान में नहीं किया जा सकता है लेकिन केवल तेरे पवित्र आत्मा द्वारा किया जा सकता है।" मैं जब दुखी थी और परमेश्वर से प्रार्थना कर रही थी, उस समय परमेश्वर ने भाई रबिंद्रनाथजी के द्वारा कहा "डरो नहीं, कार्य समय पर पूरा होगा।" उसके बाद जब पासमान प्रकाश हमारे कलिसिया में आए, परमेश्वर ने उनके द्वारा भी कहा "मैं जानता हूँ की कुछ भय है तुम्हारे हृदय में, लेकिन डरो नहीं, तुम आज क्या देख रहे हो वह थोड़ा है, लेकिन आगे, आनेवाले दिनों में परमेश्वर बहुत से महान कार्यों को करेगा। और हम देखते हैं कि कार्य समय पर पूरा हुआ। जो कहा गया था कि हम और लोगों को आते देखेंगे, सच निकला क्योंकि मंगलूर में आए लोगों की गिनती से तमीलनाडू में आए लोगों की गिनती अधिक थी। मंगलूर में ४० लोग आए थे और तमीलनाडू में लग–भग ९० लोग आए थे। दुगनी गिनती के लोग आएँ। इसलिए एक साल के अंदर गिनती दुगना हुआ। यह हमारा परमेश्वर है। जब हम उसके वचन के अनुसार चलते हैं, जब हमे संदेह होता है कि यह कार्य हो सकेगा, इन्सान के रूप में जब हमारे जीवनों में एक भय होता है, वह समय होता है जब परमेश्वर हमसे उसके दासों द्वारा बात करेगा। जैसे परमेश्वर ने बात किया है **ज़कर्याह ४:९** में, **– इस भवन की नींव जरूब्बाबेल के हाथों ने डाली है, और उसी के हाथ इसको पूरा करेंगे। तब तू जानेगा कि सेनाओं के यहोवा ने मुझे तुम्हारे पास भेजा है।** यह आशीष का एक अद्भुत वचन है। हम देखते हैं कि जब तक वचन पूरा हुआ परमेश्वर उसके साथ था। परमेश्वर के बिना हम हमारे जीवनों में कछ भी नहीं कर सकते हैं। अगर हम कोई कार्य में हमारा हाथ डालते हैं तो हम यह नहीं कह सकते हैं कि कार्य पूरा होगा। यह बहुत ज़रूरी है कि परमेश्वर हमारे साथ रहे। यहाँ जरूब्बाबेल ने परमेश्वर का मंदिर बनाया। उसे विश्वास था, उसमें जोष था और घमंड़ कि वह ज़रूर परमेश्वर के मंदिर को बाँधेगा। उसने लोगों को इकट्ठा किया, मुश्किलों को चुनौती दी और कार्य को पूरा किया। लेकिन आज हमारे जीवनों में हम किस प्रकार का मंदिर बाँधना चाहते हैं ? वचन कहता है कि परमेश्वर मनुष्य के हाथों से बने मंदिरों में वास नहीं करता। हम देखते हैं कि परमेश्वर उसके आत्मा के ज़रिए कार्य करता है। आज भी वह हर एक व्यक्ति के शरीर में वास करना चाहता है। तो आज परमेश्वर के मंदिर कौन हैं? आज हम परमेश्वर का भवन है। हम देखते हैं **प्रेरितों के काम ७:४७–४९** – में **परन्तु सुलैमान ने ही इस निवासस्थान को उसके लिए बनाया। परन्तु परमप्रदान तो हाथ के बनाए भवनों में नहीं रहता। जैसा कि नबी कहता है: "स्वर्ग मेरा सिंहासन है, और पृथ्वी मेरे चरणों की चौकी है। तुम मेरे लिए किस प्रकार का घर बनाओगे? क्या मेरे विश्राम के लिए कोई स्थान हो सकता है?**

आज परमेश्वर हम से यह प्रश्न पूछता है। स्वर्ग उसका सिंहासन और पृथ्वी उसका पदआसन है। हम हमारे परमेश्वर को नियमित नहीं कर सकते हैं क्योंकि वह एक महान परमेश्वर है। आज हम किस प्रकार का घर बाँधेंगे हमारे परमेश्वर को वास करने के लिए? हम हमारे परमेश्वर को क्या स्थान देंगे?

हमारे गाँव में, मेरे बच्चपन के दिनों, हमारे यहाँ कपाट नहीं हुआ करता था जैसे आज हमारे पास है। उन दिनो लोग लोहे के संदूक का इस्तमाल किया करते थे। कुछ लोगों के पास वह भी नहीं हुआ करता था और वें ज़मीन खोदकर एक मिट्टी के बर्तन को ज़मीन के अंदर रखते थे। गोदाम के कोने में वें एक स्थान को खोदकर इस मिट्टी के बर्तन को उसके अंदर रखते थे। उसके अंदर वें अपना सोना, अन्य कीमती चीज़े और जायदाद के कागजात रखकर उस बर्तन को कपड़े से ढाँक दिया करते थे। उस गृह की चाबियाँ घर के पौरानो के पास हुआ करता था। हर दिन वें इस बर्तन को जाँचकर देखते थे कि क्या सब–कुछ ठीक–ठाक था। उन दिनों वें अपने कीमती चीज़ो को ज़मीन के अंदर मिट्टी के बर्तनो में रखते थे। लेकिन आज हम देखते है कि किस प्रकार के मिट्टी के बर्तन में परमेश्वर अपना शक्तिशालि पवित्र आत्मा रखने की इच्छा करता है? परमेश्वर अपने पवित्र आत्मा को हमारे देहों में रखना चाहता है इस मिट्टी में जिसे उसने अपने हाथों से बनाया। मुझे याद आता है कि कैसे मेरी दादी उन चाबियों को अपने पास रखती थीं और हमेशा उस कमरे में जाया करती थीं यह देखने के लिए कि सब कुछ ठीक–ठाक तो है। उस समय हम सोचा करते थे कि उन्होंने उस कमरे में क्या रखा होगा, क्योंकि वें उस कमरे में अकेली जाया करती थी और आया करती थीं। मेरे दादा को भी वहाँ जाना मना था। कारण यह था कि उस कमरे में कई मिट्टी के बर्तन थे और एक का यह जानना ज़रूरी था कि कहाँ अपने कदम को रखना है। वहाँ एक बर्तन स्वर्ण के लिए था, एक ज़रूरी कागजात के लिए, एक – ज़रूरी कागदों का जो स्वर्ण और जायदाद गिरवी दिया गया था। ऐसे तीन–चार बर्तन हुआ करते थे। मेरी दादी उस कमरे का देख–रेख बहुत ही ध्यान से करती थीं। पर अब परमेश्वर हमारा ध्यान रखता है।

यूहन्ना १७ में परमेश्वर ने कहा है कि वह दुनिया के लोगों के लिए नहीं लेकिन अपने लोगों के लिए प्रार्थना करता था। यहाँ हम देखते हैं कि कितना अद्भुत परमेश्वर इस संसार में हमारे लिए आया है। **यूहन्ना १७:९ – मैं उनके लिए विनती करता हूँ – संसार के लिए विनती नहीं करता, परन्तु उनके लिए जिन्हें तूने मुझे दिया है, क्योकि वे तेरे है।**

यहाँ हम देखते हैं कि परमेश्वर कितना प्यार करता है उसके चुने हुए लोगों से। हम साधारण लोग नहीं हैं। हम परमेश्वर के लोग हैं और उसका प्यार हमपर है। इसलिए, यह कौन है जो हमसे प्यार करता है, हमारा ध्यान रखता है और हमारे लिए प्रार्थना करता है हमारे माता–पिता या दादा–दादी से भी बढ़कर? यह हमारा परमेश्वर है। आज भी आत्मा के द्वारा वह हमारी सारी ज़रूरतों को जानता है, कब और कैसे उसे हमको देना है, यह

भी। **यूहन्ना १७:९ – मैं उनके लिए विनती करता हूँ – संसार के लिए विनती नहीं करता, परन्तु उनके लिए जिन्हें तूने मुझे दिया है, क्योंकि वे तेरे है।**

इसलिए अब हमारा काम क्या है? हमारा काम है परमेश्वर को महिमा देना। हर स्थितियों में हम, परमेश्वर के चुने हुए लोगों को परमेश्वर को महिमा देना हैं। कभी–कभी हम परमेश्वर को महिमा देना भूल जाते हैं परमेश्वर से आशीष पाने के बाद। जब हम परमेश्वर को महिमा देना भूल जाते हैं। हम अपने आशीषों को खो देते हैं।

परमेश्वर के समय के बिना हम कुछ भी नहीं कर सकते हैं। **३८** साल से एक मनुष्य मेमने के फाटक पर पड़ा रहा। परमेश्वर वहाँ से अकसर गुज़रे होंगे और लोगों को चंगा किया होगा। लेकिन यह मनुष्य **३८** साल तक फाटक पर क्यों पड़ा रहा? वह वहाँ पड़ा रहा क्योंकि उसका समय तब तक नहीं आया था। जब समय आया वह एक ही मिनट के अंदर चंगा हुआ। इसी प्रकार लोगों को जिन्हे कई सालों से मुसीबतें थी तुरंत चंगाई पा चुक हैं। इसलिए अगर हम परमेश्वर का इंतज़ार करते हैं तो वह निश्चित रूप से हमारा देख–रेख करेगा।

हम देखते हैं **यूहन्ना १७:१४–१५** में – **मैंने उन्हे तेरा वचन दिया है, और संसार ने उनसे घृणा की है, क्योंकि जैसे मैं संसार का नहीं वैसे वे भी संसार के नहीं।** मैं तुझ से यह विनती नहीं करता कि तू उन्हे संसार में से उठा ले, परन्तु यह कि तू उन्हे उस दुष्ट से बचाए रख। यहाँ परमेश्वर प्रार्थना करता है हमारे लिए कि हम दुष्ट से बचाए रखे जाए, दुष्ट लोगों से और दुष्ट विचारों से। जब हम एक परिवार में हैं कई लोगो को परमेश्वर और उसकी कलिसिया पसंद नहीं आएगी, लेकिन कई लोगों को परमेश्वर और उसकी कलिसिया से प्रेम रहेगा। परमेश्वर नहीं प्रार्थना करता है कि ऐसे लोग इस संसार से मिट जाए, लेकिन यह कि उसके बच्चे दुष्ट लोगों से बचाए रखे जाए। हमारे पास कितना प्यार करनेवाला परमेश्वर है। बहुत –से लोग प्रभु का दिया हुआ खाना खाए, बहुत –से लोग प्रभु द्वारा चंगा किए गए। लेकिन अंत में परमेश्वर ने लोगों को देखा और कहा जो कोई मेरे स्वर्गीय पिता का इच्छा पूरा करेगा वही मेरी माता और मेरा भाई और मेरी बहन है। हमारा परमेश्वर एक अद्भुत परमेश्वर है क्योंकि उसकी करूणा के कारण हम मिट नहीं गए हैं। अगर परमेश्वर हमे पौरानिक कालों के जैसे दंड़ देता तो हमारी आधे से ज़्यादा परिवार नाष हो गया होता। लेकिन हमारे परमेश्वर की प्रार्थना है कि हम दुष्ट और दुष्ट लोगों से दूर रखे जाए जैसे दिया गया है **यूहन्ना १७:१५ – मैं तुझ से यह विनती नहीं करता कि तू उन्हे संसार में से उठा ले, परन्तु यह कि तू उन्हे उस दुष्ट से बचाए रख।**

परमेश्वर जानता है कि जिन्होने परमेश्वर के वचन को स्वीकार नहीं किया वें दुष्ट लोग हैं। इसके अनुसार हम समझ सकते हैं कि दो प्रकार के लोग हैं, अच्छे और दुष्ट। अगर परमेश्वर का दिया हुआ वचन हमारे हृदयों में काम नहीं करता और अगर हम उसके वचन को नही स्वीकार करेंगे तो दुष्ट लोग बन जाएंगे। जैसे ऊपर दिया गया वचन कहता है,

परमेश्वर हमारे लिए प्रार्थना करता है कि हम दूर बचकर रहे ऐसे दुष्ट लोगों से। यह हमारी प्रार्थना है कि परमेश्वर ऐसे दुष्ट लोगों को न लाए। वचन स्पष्ट रूप से कहता है कि परमेश्वर ने प्रार्थना की है कि उसके लोग ऐसे दुष्ट लोगों से बचाए रखे जाए। यह हमारी प्रार्थना हर दिन होनी चाहिए, कि परमेश्वर हमे इस दुष्ट संसार से बचाए रखे, दुष्ट परिवारों से और दुष्ट लोगों से जो परमेश्वर के विरूद्ध में बात करते हैं।

हम देखेंगे **यूहन्ना १७:१२–१३** में– **जब मैं उनके साथ था, मैंने तेरे नाम से जो तू ने मुझे दिया है उनकी रक्षा की, और विनाश के पुत्र को छोड़ उन में से कोई नाश न हुआ, इसलिए कि पवित्रशास्त्र की बात पूरी हो। परन्तु अब मैं तेरे पास आता हूँ, और ये बातें संसार में कहता हूँ, कि वे अपने में मेरा आनन्द पूरा पाएं।** जैसे ऊपरी वचन कहता है कि जब परमेश्वर इस संसार में था उसने सारे लोगों को पिता के नाम से संभाला। लेकिन उन में से एक नाश होना था और वह नाश हो गया। जैसे मैंने पहले कहा था, केवल वें लोग जो परमेश्वर द्वारा चुने गए थे, इस सेविकाएँ में रहेंगे। परमेश्वर ने यह नहीं कहा कि यहाँ कौनसा व्यक्ति रहेगा जब वह आएगा, लेकिन परमेश्वर ने बहुत बार कहा कि यह स्थान उसने चुना है और उसके लौटने तक यह स्थान बना ज़रूर रहेगा। परमेश्वर किसी भी व्यक्ति को उठा सकता है और उसकी महिमा इस स्थान में प्रकाशित किया जाएगा। इसलिए अगर परमेश्वर किसी व्यक्ति से प्यार नहीं करता और जिनका भाग्य नाश होना है, सिर्फ़ वे लोग इस जगह को छोड़कर जाएंगे, परमेश्वर उन्हे नहीं छोड़ेगा जिन पर उसकी आँखें लगी हैं और जिस पर वह अपनी दया करता है। अगर यह परमेश्वर का नहीं तो वें ज़रूर नाश हो जाएंगे जैसे दिया गया है **यूहन्ना १७:१२** में – **जब मैं उनके साथ था, मैंने तेरे नाम से जो तू ने मुझे दिया है उनकी रक्षा की, और विनाश के पुत्र को छोड़ उन में से कोई नाश न हुआ, इसलिए कि पवित्रशास्त्र की बात पूरी हो।** अगर भाग्य में है तो वह आज भी ज़रूर होगा। यह बदला नहीं जा सकता है। हम ऐसे लोगों को बाँधकर नहीं रख सकते हैं, क्योंकि वचन सच्चा और जीवित है।

जब मूसा इस्राएलियों की अगुवाई करने वाला था मिस्र देश से बाहर निकलने में, तब वह बहुत क्रोध से भरा इन्सान था और उसने यह सोचा कि वह अपने स्वयं–बुद्धि से और ज्ञान से फ़िरौन के विरूद्ध लड़ सकता था और सारे लोगों को मिस्र देश से बाहर ले आ सकता था। उसने मिस्री से युद्ध करके उसे मार डाला। मिस्री मनुष्य को मार डालने के बाद मूसा भयभीत हो गया और भागा और अपने–आप को छिपा लिया। यह बाद में हुआ कि परमेश्वर ने उसे यह सिखाया कि यह कार्य उसके बल से नहीं हो सकता है लेकिन परमेश्वर की आत्मा से हो सकता है। मूसा लाल समुद्र को उसके स्वयं बुद्धि से अलग नहीं कर सकता था, लेकिन यह परमेश्वर है जिसने लाल समुद्र को अलग किया। हम देखते हैं **निर्गमन ७:१ – तब यहोवा ने मूसा से कहा, "देख, मैं तुझे फ़िरौन के लिए परमेश्वर–सा ठहराता हूँ; और तेरा भाई हारून तेरा नबी होगा।**

अब हम देखते हैं कि परमेश्वर मूसा को यह भेंट देता है। स्वयं बुद्धि से मूसा ने सोचा की मिस्री मनुष्य को मार डालकर वह उस स्थान में राज कर पाएगा। लेकिन वह ऐसा कर

नहीं पाया और उसे भागकर छिपना पड़ा। लेकिन परमेश्वर उसे ढूँड़कर आया और उसे सामर्थ, ताकत और अधिकार दिया ताकि वह इस्राएलियों को मिस्र देश से बाहर ला सके। मूसा समझ गया कि उसके स्वयं बुद्धि और ज्ञान से कुछ नहीं हो सकता है, केवल परमेश्वर के आत्मा के द्वारा, जैसे दिया गया है **ज़कर्याह ४:६** में – **फिर उसने मुझ से कहा, "जरुब्बाबेल के लिए यहोवा का वचन यह है: "न बल से न शक्ति से, परन्तु मेरे आत्मा के द्वारा," सेनाओं का यहोवा यही कहता है।**

जैसे कि यह ऊपरी वचन कहता है "न शक्ति से, न सामर्थ से, केवल मेरे आत्मा के द्वारा, कहता है सेनाओं का परमेश्वर। हमारे जीवनों में, चाहे अच्छा हो या बुरा, यह केवल परमेश्वर के आत्मा से हो सकता है।

गिदोन के दिनों में मिद्यानियों इस्राएलियों के विरूद्ध लड़ाई करने आए थे। गिदोन जाकर अपने आप को खेत में छिपा लेता है। लेकिन परमेश्वर आकर उससे कहता है जैसे दिया गया है **न्यायियों ६:१२** में – **यहोवा के दूत ने उसे दर्शन देकर उस से कहा, "हे शूरवीर योद्धा, यहोवा तेरे साथ है।**

वह भीड़ से छिप रहा था जो इस्राएल के विरूद्ध लड़ने के लिए आई थी जैसे दिया गया है **न्यायियों ७:१२-१३ – मिद्यानी और अमालेकी और सब पूर्वी लोग असंख्या टिड्डियों के समान तराई में फैले पड़े थे। उनके ऊंट भी समुद्र के किनारे की बालू के कणों के समान अनगिनित थे। जब गिदोन वहां पहुँचा तो एक मनुष्य अपने मित्र को अपना स्वप्न सुना रहा था। उसने कहा, सुन, मैंने एक स्वप्न देखा है कि जौ की एक रोटी लुढकते लुढकते मिद्यान की छावनी में आई और तम्बू को ऐसी टक्कर मारी कि वह गिर गया और उल्टा होकर पड़ा रहा।**

अब गिदोन ३०० लोगों को चुनता है शत्रु के विरूद्ध लड़ने के लिए। उस समय एक मनुष्य ने एक सपना देखा कि एक रोटी लुढकते लुढकते शत्रु के सेना पर गिर जाता है और उन्हें गिरा देता है। यह मन्ना कौन है? यह स्वयं परमेश्वर है। गिदोन समझ गया कि विजय उसके बुद्धि से या उसके लोगों द्वारा नहीं प्राप्त होगा, लेकिन विजय परमेश्वर के आत्मा द्वारा प्राप्त होगा। वह स्वप्न का रहस्य समझ गया। इस लिए हर स्थिति में हम कुछ नहीं कर सकते हैं हमारे बुद्धि या ज्ञान से, लेकिन हम सब कुछ परमेश्वर के आत्मा द्वारा कर सकते हैं।

यह एक अद्भुत सपना है जैसे दिया गया है **न्यायियों ७:१३ – जब गिदोन वहां पहुँचा तो एक मनुष्य अपने मित्र को अपना स्वप्न सुना रहा था। उसने कहा, "सुन, मैंने एक स्वप्न देखा है कि जौ की एक रोटी लुढकते लुढकते मिद्यान की छावनी में आई और तम्बू को ऐसी टक्कर मारी कि वह गिर गया और उल्टा होकर पड़ा रहा।"**

जैसे ऊपरी वचन कहता है कि एक रोटी लुढकते लुढकते नीचे आई और परमेश्वर ने उन्हे विजय दिया। यह मन्ना स्वयं परमेश्वर था। इसलिए हर स्थिति में हर समय हमे विजय केवल परमेश्वर की आत्मा द्वारा मिलता है।

हम जो कुछ भी बनाकर रखेंगे अपनी बुद्धि और ज्ञान से, परमेश्वर हमसे वही कहेगा जो उसने उस धनी मनुष्य से कहा – हे मूर्ख मनुष्य! अगर आज मैं तुम्हारा प्राण लूँ तो क्या होगा उन सब चीज़ों जो तूने जमा किया था। यही हमारे जीवनों में भी होगा। हम देखते हैं कि दाऊद छोटा था और युद्ध में जाने के लिए शिक्षित नहीं था। वह युद्ध के वस्त्र को पहनना भी नहीं जानता था। लेकिन जब समय आया गोलियत के विरूद्ध खड़े होने की, वह अस्त्र–शस्त्र के साथ नहीं गया लेकिन उसने पाँच पत्थरों को जमा किया और गोलियत का सामना करने गया। क्या हम इन पाँच पत्थरों का अर्थ जानते हैं? हम देखते हैं **यशायाह ९:६** में इसके बारे में समझने के लिए – **क्योकि हमारे लिए एक बालक उत्पन्न होगा, हमें एक पुत्र दिया जाएगा; और प्रभुता उसके कांधे पर होगी, और उसका नाम अद्भुत युक्ति करनेवाला, पराक्रमी परमेश्वर, अनन्तकाल का पिता, और शान्ति का राजकुमार रखा जाएगा।**

यह पाँच पत्थर परमेश्वर के नाम हैं। जैसे दाऊद ने पलिश्ती से कहा, तुम मेरे पास तलवार लेके आते हो, बाण और भाला के साथ; लेकिन मैं तुम्हारे सामने सेनाओं के परमेश्वर के नाम से आता हूँ। इन पाँच पत्थरों को लेके, परमेश्वर के नाम से दाऊद ने गोलियत को हराया।

हमे यह जानना है कि हमारे बुद्धि और ज्ञान से कुछ नहीं होगा। लेकिन हमे विजय परमेश्वर के नाम से प्राप्त होगा। पलिश्ती तो एक शूरवीर योद्धा था और शाऊल कई सालों तक राजा रहकर भी परमेश्वर के सामर्थ को नहीं जान सका। लेकिन यहाँ था दाऊद जो एक छोटा लड़का था जो युद्ध के बारे में कुछ नहीं जानता था, लेकिन वह यह जानता था कि परमेश्वर के नाम से वें विजय प्राप्त कर सकते थे। इस पाँच पत्थरों को लेकर, परमेश्वर के नाम से दाऊद को विजय प्राप्त हुआ। हमे यह समझना हैं कि परमेश्वर के नाम से बढ़कर कुछ भी नहीं है। इस संसार में विजय प्राप्त करने के लिए, हर एक स्थिति में यह ज़रूरी है कि परमेश्वर के नाम को महिमा दिया जाए।

जब एलिय्याह इस संसार में था, उसने बहुत–से शक्तिशाली कार्यों को किया। जब उसका समय आया वह परमेश्वर के भवन में गया। एलीशा उसका चेला था। एलीशा वहाँ खड़ा था एलिय्याह का चादर लिए हुए यर्दन के तट पर और नदी ने उसे चुनौती दी कहते हुए, हे तू अल्प सा नबी, अगर तू अपने पैर को इस नदी में रखेगा तो मैं तुझे खींचकर ले जाऊँगा। तू मेरे सामने क्या है? मैं तुझे नाश करूँगा। तू अपने कदम को यर्दन नदी में रखने की बात सोचना भी नहीं। लेकिन एलीशा को विश्वास था और उसके हाथ में एलिय्याह का चादर था। वह जानता था कि हमारा परमेश्वर पक्षपात करने वाला नहीं है। उसने परमेश्वर को पुकारा और चादर से यर्दन को पटका और पानी अलग हुआ। अब वह पानी एलीशा के सामर्थ से नहीं अलग हुआ लेकिन हमारे परमेश्वर के नाम से हुआ। परमेश्वर का महिमा एलिय्याह पर था और उसके हृदय में विश्वास था। उसने पानी पर चादर पटका और चमत्कार हुआ। इसी प्रकार चाहे जो भी मुश्किले या दुख हो, हमारे शत्रु चाहे जो भी कहें, लेकिन इन सारी बातों के बीच हमे हमारे परमेश्वर के नाम दिए गए हैं,

जैसे दिया गया है **यशायाह ९:६** में – क्यो**कि हमारे लिए एक बालक उत्पन्न होगा, हमें एक पुत्र दिया जाएगा; और प्रभुता उसके कांधे पर होगी, और उसका नाम अद्‌भुत युक्ति करनेवाला, पराक्रमी परमेश्वर, अनन्तकाल का पिता, और शान्ति का राजकुमार रखा जाएगा।** हमे इस वचन को, परमेश्वर के नाम को हमारे जीवनों में हमेशा याद रखना हैं। यह हमारे लिए परमेश्वर का भेंट है और हमे इसपर हमारे जीवनों में विश्वास करना चाहिए। फिर एलीशा के जैसे हम सारे बाधाओं को निकाल सकते हैं। एलीशा के पास एलिय्याह का चादर था और उसके हृदय में विश्वास था। इसलिए, आज हमे हमारे हृदयों में विश्वास करना चाहिए, कि यह नाम हमारे लिए दिए गए हैं और हमे इन नामों से विजय प्राप्त होगा। यह बहुत ही ज़रूरी है कि हम हर स्थितियों में परमेश्वर के साथ रहे।

हम देखते हैं **यशायाह २८:१६** में – **इसलिए प्रभु यहोवा यों कहता है, "देखो, मैं सिय्योन में एक पत्थर, एक परखा हुआ पत्थर, हां, नींव के लिए एक बहुमूल्य कोने का पत्थर, दृढ़ता से रखने पर हूँ जो कोई उस पर विश्वास करेगा वह न डगमगाएगा।** परमेश्वर उन सब के लिए कार्य करेगा जो विश्वास करते हैं क्योंकि वह निष्पक्ष परमेश्वर है। हम देखते हैं **प्रेरितों के काम १०:३४ – तब पतरस ने मुँह खोलकर कहा : अब मैं सचमुच समझ गया हूं कि परमेश्वर किसी का पक्षपात नहीं करता।**

अगर हम परमेश्वर पर विश्वास करते हैं, वह कार्य जो उसने एलीशा के जीवन में किया, वह हमारे जीवनों में भी करेगा। यह बहुत ज़रूरी है कि हम परमेश्वर पर विश्वास करें।

हम देखते है **यिर्मयाह ३२:२७** में – **"देख, मैं सब प्राणियों का परमेश्वर यहोवा हूं, क्या मेरे लिए कोई काम कठिन है?**

वह केवल एलिय्याह और एलीशा का परमेश्वर नहीं है, लेकिन वह सारे लोगों का परमेश्वर है। ऐसा कोई कार्य नहीं जो वह नहीं कर सकता है। हमारे जीवनों में यह बहुत ज़रूरी है कि हम विश्वास करे उन नामों पर जो परमेश्वर ने हमे दिया है। यह जरूरी है कि हम विश्वास करे के वचन स्वर्ग से आया मन्ना है।

अब एलिय्याह का परमेश्वर कौन है? वह प्रार्थनाओं को सुनने वाला परमेश्वर है। परमेश्वर ने एलिय्याह के जीवन में इतने सारे महान कार्यों को क्यों किया? **१ राजा १७:१ – तब तिश्बी एलिय्याह ने जो गिलाद के परदेशियों में से था अहाब से कहा, इस्राएल के परमेश्वर यहोवा के जीवन की शपथ जिसके सम्मुख मैं उपस्थित रहता हूं, निस्सन्देह इन वर्षों में मेरे कहे बिना नतो मेघ बरसेगा और न ओस पड़ेगी।"** यहाँ हम देखते हैं कि एलिय्याह परमेश्वर के सामने खड़ा रहता है। वह एक योग्य पात्र था और यही कारण है कि परमेश्वर ने उसकी प्रार्थना सुनी। वह क्या कहता है, वह होता था। हर समय और हर स्थिति में वह एक योग्य मनुष्य था परमेश्वर के सामने खड़े रहने के लिए। जब हम प्रार्थना करते हैं परमेश्वर हमारी प्रार्थना सुनेगा, लेकिन हम किस प्रकार के लोग हैं? क्या हम लोग योग्य हैं उसके उपस्थिति में बैठकर उससे प्रार्थना करने के लिए? यह बहुत ज़रूरी है हमारे लिए कि हम इस बात को हमारे जीवनों में हर दिन जांचे। हमने एलिय्याह के बारे में बहुत सी

चीज़े सुनी हैं। वह एक ऐसा मनुष्य था जो परमेश्वर की उपस्थिति में खड़े रहकर चुनौती को जीत लेता था। यह नहीं कि हमने परमेश्वर से पूछा और परमेश्वर ने हमे दिया नहीं है। हम वचन में देखते हैं कि परमेश्वर ने एलिय्याह को कौओं के द्वारा खाना खिलाया। हमारा परमेश्वर प्यार करने वाला परमेश्वर है। जब तुम तुम्हारे कदम आगे रखते हो तब परमेश्वर तुम्हे ज़रूर तीन गुना आशीष तुम्हारे जीवन में देगा। यह एलिय्याह का परमेश्वर है जिसने उसे कौओं द्वारा खाना खिलाया। इतना ज़्यादा प्यार करता हैं परमेश्वर उसके लोगों से। जब हमे परमेश्वर पर विश्वास होता है तब उसका प्यार हम पर होता है, हम देखते हैं **१ राजा १७:६** में – **और कौए सुबह और शाम उसके लिए रोटी और मांस लाया करते थे, और वह नाले का पानी पीया करता था।** एलिय्याह के परमेश्वर ने उसे सुबह–शाम कौओं के द्वारा खाना खिलाया। यह मनुष्यों के द्वारा नहीं हो सकता है, लेकिन केवल परमेश्वर के आत्मा के द्वारा हो सकता है। हम चाहे कितना भी एक कौए को सिखाए, यह संभव नहीं की वह इस प्रकार खाना लेकर आए। इसलिए परमेश्वर ने कहा न शक्ति से न सामर्थ से, पर मेरे आत्मा के द्वारा। इसलिए हम देखते हैं कि परमेश्वर की आत्मा से सारी चीज़े की जा सकती हैं। हम कौओं के ज़रिए माँस नहीं भेज सकते हैं। लेकिन परमेश्वर के वचन से ऐसा कार्य किया जा सकता है। हम एक और उदाहरण देखते है जिसमे परमेश्वर एलिय्याह को एक स्त्री के द्वारा खाना दिलाता है। वह अपने अंतिम भोजन तैयार कर रही थी, मरने के पहले, लेकिन उसके ज़रिए परमेश्वर ने एलिय्याह को खाना दिलाया। हम देखते हैं **१ राजा १७:१६** में – **यहोवा के उस वचन के अनुसार जो उसने एलिय्याह के द्वारा कहा था न तो उस घड़े का आटा समाप्त हुआ और न उस कुप्पी का तेल घटा।** परमेश्वर ने एलिय्याह को इस विधवा के द्वारा खाना दिलाया और उसके बाद आटा और तेल की कमी उसके घर में नहीं थी। योग्य सेवक को देकर जो परमेश्वर के उपस्थिति में खड़े रहता है, हम देखते हैं कि उस विधवा ने महान आशीषों को परमेश्वर की ओर से पाया। उस घर में आटा और तेल की कमी कभी नहीं हुई। इस में बड़ा रहस्य है। इसलिए देने से हम महान आशीष पाते हैं। एक दास जो परमेश्वर की उपस्थिति में खड़े रहता है, को देने में उस स्त्री को न आटा और न तेल की कमी कभी हुई। परमेश्वर ने स्वर्गदूत भेजकर एलिय्याह को खिलाया। क्योंकि एलिय्याह परमेश्वर के सामने खड़ा रहता था, हम देख सकते हैं उन सारे मार्गों को जिनमे परमेश्वर ने उन्हे दिया। हम देखते हैं **१ राजा १९:५** – **और वह झाऊ के पेड़ के नीचे लेट गया और सो गया, और देखो, एक स्वर्गदूत ने उसे छूकर उस से कहा, "उठ और खा।** यहाँ हम देखते हैं कि परमेश्वर ने एलिय्याह से बात करने के लिए एक स्वर्गदूत को भेजा। परमेश्वर ने एलिय्याह को कौए के द्वारा, फिर विधवा के द्वारा और अब सीधे स्वर्गदूत के द्वारा खाना खिलाया। हम बहुत सी आशीषों को एलिय्याह के जीवन में देखते हैं। यह कब हो सकता है? जब हम परमेश्वर के सामने खड़े होने के लिए योग्य होते हैं, तब यह आशीष हमारे जीवनों में ज़रूर आएंगे। मैं तुम्हारे सामने एक साक्षी हूँ। मैंने इस सेविकाएँ के कामों को किसी मनुष्य द्वारा दिए गए भेंट से नही किया। यह सारा कार्य परमेश्वर की आत्मा के द्वारा हुआ है। परमेश्वर के बिना

चाहे लाखों रूपए भी मिले, कुछ भी नहीं किया जा सकता है। परमेश्वर ने अपने चुने हुए को कौओं के द्वारा खाना खिलाया, फिर परमेश्वर ने उसे विधवा के द्वारा मदद किया और उसके बाद एक स्वर्गदूत आकर उसे बुलाकर जगाता है। एलिय्याह ने सोचा कि उसे प्रार्थना करना चाहिए लेकिन वह थक चुका था और झाऊ के पेड़ के निचे सो रहा था। लेकिन स्वर्गदूत एक मित्र के रूप में आया, एक शांति दिलाने वाले के जैसे और उससे कहा कि उठकर खाए क्योंकि उसे लंबा सफर तय करना था और परमेश्वर के लिए बहुत कार्य करना था। इसलिए वह जाग गया और खाने लगा और उस खाना के द्वारा वह चालीस दिन चला। इसी प्रकार परमेश्वर की आशीषें हमारे जीवनों में आती है उसकी कोई सीमा नहीं। जैसे कि यह गाना कहता है, जबसे प्यारा येशू आया मेरा जीवन बदल–बदल गया। कोई भी आशीषों को रूका नहीं सकता। जीवन जो बदल गया है, बदला हुआ ही रहेगा परमेश्वर के लिए। इसलिए हमे गर्व और अभिलाषा होनी चाहिए, हमारे हृदयों में परमेश्वर की सेवा करने के लिए।

यह बहुत ज़रूरी है कि हम हर कार्य में आगे बढ़े, प्रार्थना में और अनेक कामों में क्योंकि हम यह सब परमेश्वर के लिए करते हैं। इसलिए जरूब्बाबेल के जैसे हमारे जीवनों में भी यह ज़रूरी है कि हम आशिषित बने। परमेश्वर के लिए काम करने के लिए और उसके कार्यों को पूरा करने के लिए जब हम अपना हाथ रखते हैं तब परमेश्वर कहेगा तूने अपना हाथ रखा है, मैं ज़रूर इस कार्य को पूरा करूँगा। परमेश्वर यह कार्य सबके जीवन में करेगा। एलिय्याह का परमेश्वर जीवन देने वाला परमेश्वर है। वह सिर्फ़ खाना नहीं देगा बल्कि जीवन भी देगा। हम देखते हैं **१ राजा १७:२१–२२ – तब वह उस बालक पर तीन बार पसर गया, और उसने यहोवा को पुकार कर कहा, "हे मेरे परमेश्वर यहोवा, मैं तुझ से विनती करता हूं कि इस बालक का प्राण इस में लौट आए।"** यहोवा ने एलिय्याह की पुकार सुन ली, और बालक का प्राण उसमें लौट आया और वह जीवित हो गया।

देखो परमेश्वर ने कितना महान कार्य किया है। परमेश्वर जीवन देने वाला परमेश्वर है। आज भी, अगर हम पाप में जकड़े हुए हैं, जलन और दुष्ट से जकड़े हुए हैं तो हमे हमारे जीवनों में एलिय्याह के परमेश्वर को पुकारना हैं। वह हमे नया जीवन देने के लिए तैयार है। आज हमारे बुद्धि, ज्ञान और समझ से जो नहीं हो सकता है, वह परमेश्वर के आत्मा से ज़रूर होगा। यही चुनौती आज परमेश्वर हम सबको दे रहा है।

आज एलिय्याह के परमेश्वर को पुकारो, यह वह है जो तुम्हे जीवन देता है और तुम्हारे जीवनों को बदलता है उसे तुम्हारे जीवनों से सारा गंदगी और मैल निकाल ने के लिए कहो ताकि तुम उसके आशीष को इस संसार में पा सकोगे, ताकि उसकी आँखें हमारे परिवारों पर रहे। जैसे उसने लोगों को कौओं के ज़रिए खाना खिलाया, विधवा के ज़रिए खिलाया और स्वर्गदूत के ज़रिए खाना खिलाया, उसी प्रकार परमेश्वर की दया हम पर रहने दो। आज भी अगर हम परमेश्वर से माँगते हैं, वह हमे यह आशीष देगा क्योंकि वह पक्षपात करनेवाला परमेश्वर नहीं है। वह सबसे प्यार करता है। जैसे परमेश्वर कहता है; वह सारे संसार के लिए नहीं बल्कि उसके लोगों के लिए प्रार्थना करता है। इसी प्रकार,

बहुत से बार हमे भी हमारे हृदय में दुख होता है जब लोग सेविकाए के विरूदध बात करते हैं। परमेश्वर कहता है कि वह नाश करने नहीं बल्कि उसके लोगों को दुष्टों से बचाने के लिए कहता है। इसलिए यह उसकी करूणा है कि आज भी दुष्ट लोग इस संसार में जीते हैं। लेकिन एक समय आएगा जब सब जानेंगे क्या बड़े–बड़े लोगों ने नहीं किया वही हम एक छोटी सी कलिसिया, ने किया हैं। दो आश्रम बाँधे गए और हमने परमेश्वर के महान आशीष को हमारे जीवनों में देखा हैं। बहुत–सी बड़ी कलिसियाओं यह काम को नहीं किया और हमारे माता–पिता ने भी यह काम को नहीं किया। लेकिन हम यह कर पाए। हम परमेश्वर को धन्यवाद देंगे और हमारे जीवित परमेश्वर की स्तुति करेंगे। यह वह परमेश्वर है जिसकी आँखें हम पर हर स्थिति में लगी है और यह वह है जो सारी प्रार्थनाओं का जवाब देता है। हम उसकी सेवा करने के लिए योग्य बने।

– पास्टर सरोजा म.